"प्रकृती पर मानव का हस्तक्षेप"

हम जानते है कि प्रकृती हमारे माँ है। हमारे सबसे बडे दोस्त जो हमारे ज़िन्दगी की अच्छाई के लिए है। हर आदमी उस माँ को मार रहा है। जो लोग हमारे माँ को मार रहा है उन्हे हम क्या कर सकते है? प्रकृती जो हमे सब कुछ देता है। और वो माँ जिसने हमे पाला पोसा उनसे भी एक बडी माँ है प्रकृती। यह सब बात हम जानता है। फिर भी हम लोग प्रकृती को क्यों नष्ट कर रहा है। पेहले मे प्रकृती हमारे साथ मिल जुलकर जी रहा था। वो किस वजह है जिससे हमने प्रकृती से हमारे रिश्ता तोड दिया?

हम जानता है प्रकृती हमसे बहुत चीज़ चाहता है जैसे कि हम वापस प्रकृती के साथ आओ और ऐसे बहुत चीज़ो के बारे मे प्रकृती सोच रहा है। फिर भी हम उस प्रकृती माँ से दुर क्यों जा रहे है? वो हम सब जानता

है। कि हमारे माँ को नष्ट करनेवाले हम ही है जैसे कि हम हमारे प्रकृती के बच्चों को मार रहा है और पेड पौधों को काटकर हम ही हमारे प्रकृती को चोट लगाता है। मैं जानती हूँ कि प्रकृती हमें नष्ट करने के लिए आ रहा है क्योंकि हमने प्रकृती को कितने दर्द दिलाया है। उन सब दर्द सिर्फ उनके बच्चों ही किया है। हम प्रकृती को कितनी तरह से मार रहा है। जैसे कि हम हमारे वायु जो हमारे वरदान है वर्दान है उसे हम मालिन कर रहा है जैसे कि हमारे धरती पर कितने पेड पौधे है उन सब को काट करते इतना वायु को मालिन कर रहा है। जैसे कि इसका उदाहरण है दिल्ली जहाँ पेड और पौधों से भी ज्यादा गाडियाँ है। इसके वजह से वहाँ का वायु कोई किसी को साँस भी नही ले सकता है। उन्हें क्यों पेड पौधों को रखकर अपनी माँ को क्यों नहीं बचा सकते। पे मैं जाना हूँ कि पेड पौधों को रखकर क्यों अपना समय खराब

कर रहा है? हर आदमी ये बात सोचेगा कि मैं क्यों अपने समय खराब करूँ। ऐसे लोगों का ना यहाँ जीने का हक भी नहीं है। अगर ऐसा चला गया तो इस दुनिया का सर्वनाश हो जाएगा। आप लोग जानते है कि हमारे दुनिया पर कितने पेड पहले रहते थे। अब कितने पेड हम लोगों ने काट कर हमारे माँ को नष्ट कर रहा है। इस हस्तक्षेप नहीं तो क्या कहेंगे। ये प्रकृती का हस्ताक्षेप ही है। इस हम कैसे रोक सकते है? इस रोकना मुश्किल है क्या?

और हमारे इस देश या पूरी दुनिया में पीने के लिए बहुत कम पानी है। इस पानी को हम कैसे मालिन कर सकता है? यह पानी जिसे कितने लोगों को नहीं मिलते उसी पानी को हम कैसे नष्ट कर सकता है? मेरे मन में एक बात है कि हम सब पानी का इस्तमाल ध्यान से करना चाहिए नहीं तो यह पीने का पानी हमेशा इस

दुनिया से नष्ट हो जाएगी। अब हमारे समुंदर को भी मलिन कर रहा है। हमारे लोग इतना सहकरके भी वो क्यों नहीं सुंदर रहा है? यह लोगों को कोई पिगलने वाले दिल नहीं है। जो महा सागर है वो कितना सुंदर है। और उसमें कितना जीव है। इन सब को हम मलिन सागर को मलिन करके हम मार रहा हो ये हम क्यों कर रहे हैं? अब से प्रकृती हमसे पूछने के लिए आ रहा है इसका उदाहरण है केरल का महा बाढ़ और पानी का दुर्लबता ऐसे बहुत सारे उदाहरण है जिससे हमारे प्रकृती लोगों से पूछने आता है। हम सीखना चाहिए कि हमारे प्रकृती भी हमसे पूछने आएगी। ये बात हमने कभी नहीं सोचता है। इस रोकने के लिए सब को प्रकृती के साथ फिर से चला जाना पड़ेगा। हम आदमियाँ हमारे अच्छाई के लिए प्रकृती को मार रहा है। मगर हमे सोचना है कि प्रकृती को मारकर हम अपने आप को

मार रहा है। प्रकृती हमारे एक दोस्त है जो हमारे हर दुख और कठिनाई में हमारे साथ रहता है। वो प्रकृती को हम क्यों मार रहा है? वो प्रकृती अन्य दोस्तों के जैसा नहीं है जो हमें धोखा देता है। हमें उस प्रकृती ने कितना प्यार दिया है। उसे हम क्यों दर्द दिला रहा है?

प्रकृती बहुत अनमोल है न? ये प्रकृती मानव को कितना प्यार देता है। उसे जो हमारे माँ के जैसा सोचता है उसे हम क्यों मार रहा है? एक बच्चा अपने माँ को क्यों मारेगा? ~~हमारे~~ ~~प्र~~ प्रकृती के बच्चों को नहीं जानते है कि वो किसको मार रहा है। ये एक सोचने वाली बात है। एक बच्चा अपने माँ को स्वयम मारना या दर्द देना। इसे हम लोग कैसे रोक सकता है। ~~कि~~ हमारे जिन्दगी कुछ साल के लिए ही रहता है। मगर हमारे प्रकृती हमारे हर पररंपरा को देखभाल करके यहाँ रहना चाहिए। तो हम क्यों ना

इस प्रकृती यानी हमारे माँ को बचाएँ?

हम हमारे माँ को अब दर्द देने का एक बात है, पलास्टिक का इस्तमाल। हम हमारे प्रकृती को पलास्टिक के अधिक इस्तमाल से नष्ट कर रहा है। ये पलास्टिक है ना उसे जला भी नही सकते और उसे यहाँ इदर उदर फेंक भी नही सकते यह पलास्टिक जहाँ जलाता है वहाँ के वायू मलिन होता है। और वहा एक काला रंग के चीज़ आता है जो हमारे धरती को नष्ट करेगा। ये पलास्टिक जो धरती पर बनाया गया है उसे हम कुछ नही कर सकते। इसलिये हम उस पलास्टिक को समुंदरों में फेंकता है। इसके वजह से सागर के हर मचली मर रहा है। इसे हम कैसे रोक सकता है? ऐसे काम करके हम ही अपने प्रकृती मा को मार रहा है। ऐसे मानव करनेवाला अन्याय अगर आप लोगों ने सुना तो आप ज़रूर अपमानित होगा। मगर यह सब बात हम नही

जानते क्योंकि अब तक आदमी के पास पैसा है वो आदमी को कोई भी जुर्म कर सकता है कोई उससे कुछ नहीं पूछने आएगा। यही है इस दुनिया का सबसे बडा समस्य क्योंकि जिसके पास पैसा है वो जुर्म करता है। अगर पैसा और कुछ नहीं किया तो वो लोग प्रकृती को नहीं मारते या दर्द करते।

यह एक सोचनेवाला और गंभीर बात है कि हमारे प्रकृती हमें अपने बच्चों को मार डालने के लिए आ रहा है। इस प्रकृती यानी की हमारे माँ को अपना दर्द अब सह नहीं पा रहा। और मानव यह सब सुनने की बात वो सुनकर नहीं रहा है। इसके लिए हमें क्या-क्या कर सकता है। इसका जवाब हम सब जानता है मगर हम उसे क्यों नहीं कर रहे? इस दुनिया में कितने आदमी सीर्फ यहाँ वहाँ घुमता है क्या उन्हें यह सब क्यों नहीं कर सकते ये हमारे दुनिया के लिए ज़रूरी है। अगर

यह सब जल्दी नही किया तो ज़रूर हमारे देश या पूरी दुनिया मिट जाएगा। इसे हमें रोकना चाहिए।

अब हमारे दुनिया में इतने मालिनाई चल रहा है। इस हम कैसे रोक सकते है? इससे हमारे ज़िन्दगी मिट जाएगा। और धरती में कोई मानव नही रहेगा। हमारे ~~अंतार~~ अंतरीक्ष कितना मालीन हुआ है। इसके कारण हमारे 'ओज़ोण' टूट रहा है। और ~~अल्ट्रा~~ 'यू. वी' किरणें हमारे दुनिया पर आ रहा है इसके कारण हमारे दुनिया मिट जाएगी इससे बहुत ~~बड़~~ भयंकार ~~ब~~ बीमारियाँ हमारे दुनिया पर आ रहा है। यह सब प्रकृती को मानव करने वाला हस्तक्षेप नही तो और क्या है? हम खुद अपने आप मार रहा है। ये हम ~~हमारे~~ ~~स~~ सोचता नही है क्योंकि हम सोचता है सिर्फ हमारे बारे में। अगर ऐसा चला गया अगला परंपरा यहाँ जी भी नही पाएगा। या फिर एक आदमी ही नही एक जीव

भी यहाँ रह नहीं पाएगा। यह सब प्रकृती ~~हमारे~~ हमसे वापस पूछता है कि उसे हमने क्या मारने कि कोशिश किया। ~~अगर~~ हम लोग अपने प्रकृती को प्यार करके नई पेड पौधों को इस धरती पर रख लिया तो मानव इतनी ~~कठिना~~ कठिनाइयों से गुजरना चाहिए। जैसे कि भाड़, 'सुनामी', भूकंप, आदि बातों से नहीं लड़ना चाहिए था।

यह सब होकर भी हम यह सब रोका है। नहीं न हमने फिर से अपने पानी को नष्ट कर रहा है। जैसे कि हमारे अच्छी और सबसे पुण्य नदियाँ था गंगा और यमुना हमने उन्हें भी नहीं छोडा उन दो नदियों को भी हमने प्लास्टिक डालके और उसके पास नई इमारतें रखके और फाकटरियाँ रखके उसे मलिन कर दिया। यह सब मानव का हस्ताक्षेप नहीं तो और क्या है? यह सब सुनके मुझे ही दर्द आ रही है कि हमने प्रकृती को कितने दर्द किया है और

हमारे प्रकृती माँ ने कितने सह लिया है। अब हमारे जिन्दगी पूरी तरह से अंत होने के लिए कुछ ही देर की बात है। इस समय में भी हम प्रकृती को बचा सकता है। प्रकृती का सर्वनाश हमारे भी नाश है। तुम लोग जानते है कि हमारे हमारे लिए और उनके बच्चों के लिए अब भी जिन्दा है। हम हमारे प्रकृती को बचाने के लिए बहुत सारे लोग कर रहा है। कुछ लोग इस नष्ट भी कर रहे है। उन्हे हम कैसे रोक सकता है? हम इन लोगों को जागरूकता 'क्लास' रखके उनका दिल बदल देना चाहिए। ऐसे लोग हमारे जिन्दगी में नहीं चाहिए। यह जिन्दगी और प्रकृती सिर्फ हमारे लिए ही नहीं अगले परंपरा के लिए भी है। इसलिए प्रकृती को मत नष्ट करना बालको उस प्रकृती माँ को बचाऊँ। ऐसे बचाकर जिन्दगी और अच्छी हो जाएगी। और जिस प्रकृती के बच्चों को हमने नाश है उसे फिर से जिन जीने के लिए जगह

देना होगा।

अगर हमने हमारे प्रकृती को वापस मिलना चाहिए तो हमें खुद निकलकर अपना प्रकृती को बचाना चाहिए। प्रकृती पर मानव करनेवाला हर हस्ताक्षेप को रोकना चाहिए।" अगर हमें देखने के लिए आँख है मगर हमें कुछ सुंदर चीज नहीं देख पा रहा है। कान होकर भी हमें अच्छी बातों को सुन नहीं पा रहा तो, एक दिल जो अच्छाइयों को नहीं समझ पा रहा है और एक हृदय जो दर्द बात सुनकर पिगल नहीं रहा है इस प्रकृती का दर्द नहीं समझ पाएगा।" ये हमेशा अपने मन में रहना होगा। प्रकृती सिर्फ एक ही बार के लिए वो अगर एक बार नष्ट हुआ तो फिर से बना नहीं सकते। इसलिए हम अपने प्रकृती को हमेशा बचाना चाहिए। चाहे वो अपनी जान चला जाए तब भी। प्रकृती हमारे सिर्फ हमारे लिए नहीं - वो सबके लिए है तो इस प्रकृती से या किसी से मत कहो की यह मेरा जगह यह सब जगह सीर्फ कुछ वक्त

के लिए है। हम यह सब देखकर एक दिन ज़रूर गुज़र जाएगा।

हमारे प्रकृती बहुत कठिनाइयों से गुज़र कर आया था ना। यह हम सब जानता है। हमारे प्रकृती का नष्ट होने का एक बहुत बडी बात है हम विज्ञान मे इतनी आगे आ गई है। हमे बहुत सारे नई चीज़ हमारे पास है। जैसे कि 'टीवी', फोण, आदि यह सब प्रकृती के लिए हानीकारक है। इस प्रकृती को नष्ट ~~करना~~ करने का पूरा हक हमारे विज्ञान का है। विज्ञान के वजह से हम अब हमारे प्रकृती के साथ नहीं रहता है। जो किसान हमारे प्रकृती और हमारे लिए जी रहा है उसे हम धोखा दे रहा है। हमारे विज्ञान आगे चलने से किसान अपने काम छोडके कोई और काम कर रहा है। यह कैसे बात है। जो विद्यालय मे पढता है वो प्रकृती के साथ नहीं रहता मगर वो लोग नई काम ढूंड के कई और चलता है। इसे हम कैसे रोक सकता है? और हम

कैसे हमारे प्रकृती को वापस ले सकता है। यह सोचना हमारे और आगे वाले लोगों के ज़िन्दगी के लिए बहुत ज़रूरी है। यह प्रकृती और ज़िन्दगी ही एक ही बार आएगा। अगर नष्ट हुआ तो वापस नहीं ले सकता। हमें क्या क्या करके अपने प्रकृती को बचा सकता है और मानव का हस्ताक्षेप कैसे रोक सकता है? हमें प्रकृती को हमेशा अपने ज़िन्दगी का भाग बनाना चाहिए अगर वो सफल हुआ तो आधा काम या प्रकृती का आधा समस्य से दूर जाएगा। हमें प्रकृती के पहाडों और नदियों को मत मलिन करना चाहिए। पहाडों को नष्ट नहीं करना चाहिए। और अपनी प्रकृती की महत्व जानके हमें जीना होगा। प्यार देना चाहिए प्रकृती को। अपने प्रकृती के हर पेड पौधों को काटना रोका तो हमें अच्छी वायू मिल जाएगी। और पानी को मलिन करना रोकना चाहिए अगर यह सब हुआ तो हमारे प्रकृती और मानव सुंदर जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो

जिन्दगी बदल जाएगी। और हर वक्त किसी काम करने की पहले प्रकृती के बारे में सोचो और प्रकृती को नष्ट करना किसी को मत देना और मानव को प्रकृती से हस्ताक्षेप रोकना चाहिए। और यह बात किसी को प्रकृती को नष्ट करने का अनुवाद मत दो। ये अपने मन से कभी नहीं भूलना चाहिए। ये हम सभ प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि कोई प्रकृती को नष्ट नहीं करने वाला। ये कभी मत भूलो.....